IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मैनेजर पाण्डेय की युवा पीढ़ी की रचनाशीलता संबंधी विचारधारा

शोध छात्रा

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा

एरणाकुलम

केरल

मूल शब्द

1. डॉ. मैनेजर पाण्डेय 2 युवा पीढ़ी की रचनाशीलता 3) भूमंडलीकरण का फैलाव 4) अमेरिकीकरण 5) उदारीकरण 6) पूर्वाग्रहों से संघर्ष 7) पाखंड की प्रवृत्ति 8) साहित्य की सामाजिकता की रक्षा की चुनौति 9) दलित साहित्य का उभार

सार

मैनेजर पाण्डेयजी ने ही हिन्दी साहित्य को ऐतिहासिक दृष्टि, प्रदान करते हुए हिन्दी साहित्य के आलोचना को विकास के पथ पर लाया है। पाण्डेय हिन्दी के मार्क्सवादी आलोचनाकारों में प्रमुख माने जाते हैं। समकालीन साहित्य के साथ-साथ भक्तिकाल और रीतिकाल के साहित्य के साहित्य पर मैनेजर पाण्डेय जी ने नवीन दृष्टि से नवीन स्थापनाएँ देने में सफल हुए है।

डॉ. मैनेजर पाण्डेय जी के "आलोचना में सामाजिकता" नामक आलोचनात्मक लेख में युवा पीढ़ी की रचनाशीलता संबंधी विचारधारा का सुन्दर चित्रण किया है। नई पीढ़ी के रचनाकारों के सामने भूमंडलीकरण के फैलाव के कारण अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा था। नयी पीढ़ी के रचनाकार प्रेम संबंधी कवितायें, दलित साहित्य, नाट्यम लेखन करने में सिद्धहस्त है।

प्रस्तावना

डॉ. मैनेजर पाण्डेय ने नयी पीढी की भावनाओं को सहानुभूति से समझनेवाला है। नयी पीढ़ी की रचनाशीलता का विश्लेषण करने के लिए डॉ. मैनेजर पाण्डेय जी ने नागार्जुन के युवा पीढ़ी के विचारधारा भी प्रमुख है। नयी पीढ़ी के रचनाकारों के सामने अनेक चुनौतियाँ मौजूद थी। भूमंडलीकरण का फैलाव होता जा रहा था। भूमंडलीकरण का लक्ष्य

पूँजीवाद को दिग्विजयी बनाना और सारी दुनिया की पश्चिमीकरण या अमेरिकीकरण करना है। युवा पीढ़ी के रचनाकार प्रेम करने को और कविता लिखने को एक जैसा समझते है। नयी पीढ़ी के कथा-साहित्य में उदारीकरण और टेक्नोलॉजी के प्रभाव के कारण अनेक विकास और सामूहिक परिवर्तन होता है। नयी पीढ़ी के आलोचक पूर्वाग्रहों से संघर्ष करते हुए एक विभिष्ट प्रकार की आलोचना दृष्टि का विकास करते है। नयी पीढ़ी के दलित कहानिकार हिन्दु समाज की संरचना में मौजूद दमन, हिंसा और पाखंड की प्रवृत्तियों को विश्लेषित किया है। सतर्क संवेदनशीलता और तीव्र उत्सुकता को जोडते हुए नयी पीढ़ी ने साहित्य की सामाजिकता की रक्षा की चुनौती स्वीकार किया है। दलित साहित्य और नाट्य लेखन में भी नयी पीढ़ी के रचनाकारों ने अनेक परिवर्तन किया है।

युवा पीढ़ी की रचनाशीलता

बीसवी सदी के अन्तिम दशक में हिन्दी साहित्य के नये पीढ़ी के रचनाकारों के सामने अनेक चुनौतियाँ मौजूद थी। नयी पीढ़ी के रचनाकारों केलिए भूमंडलीकरण के फैलाव के संदर्भ में डॉ. मैनेजर पाण्डेय जी कहते हैं - "भूमंडलीकरण के नारे का सम्मोहन और चित्त-विजय का सर्वग्रामी अभियान नयी पीढ़ी की जनता चकित कर रहा था उससे अधिक आतंकित क्योंकि भूमंडलीकरण का लक्ष्य है, पूंजीवाद को दिग्विजयी बनाना, सारी दुनिया का पश्चिमीकरण करना, जिसका वास्तविक अर्थ है अमेरिकीकरण। इसका परिणाम होगा मानव समाज में आर्थिक विषमता का विस्तार, प्रकृति तथा पर्यावरण का विनाश और हिंसा की संस्कृति का उत्तरोत्तर प्रसार, जो पूँजी की संस्कृति की अनिवार्य विशेषताएँ हैं।"1 भूमण्डलीकरण के नारे सम्मोहन और चित्त-विजय से आगे बढ़ रहे हैं। भूमण्डलीकरण के लक्ष्य पूंजीवाद को दिग्विजय बनाना, सारी दुनिया का पश्चिमीकरण करना अर्थात् अमेरिकीकरण इसके परिणाम के रूप में आर्थिक विषमता का विस्तार प्रकृति और पर्यावरण का विनाश, हिंसा की संस्कृति का विकास आदि कार्य हुआ था।

युवा पीढ़ी प्रेम प्रसंग पर आधारित अनेक रचनायें करते थे। इस संदर्भ में मैनेजर पाण्डेय जी कहते हैं - "युवा पीढ़ी के लिए तो प्रेम करना और कविता लिखना लगभग एक जैसा है क्योंकि दोनों ही मनुष्य की स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति के प्रमाण है और ऐसी अभिव्यक्ति की जैसी तत्परता युवावस्था में होती है वैसी बाद में नहीं। युवा पीढ़ी के अनेक कवियों ने प्रेम की महत्वपूर्ण कविताएँ, लिखी हैं जिनमें कहीं द्वन्द्व है, कहीं तनाव और कही गहरी पीड़ा है। आज का युवा कवि प्रेम की कविता लिखते समय यह कैसे भूल सकता है कि वह एक ऐसे समाज का कवि है जिसमें जाति और धर्म की निर्मम रूढियों की वेदी पर प्रेम की बलि चढ़ाई जा रही है, प्रेम करने वालों को सार्वजनिक रूप से पंचायत में फाँसी दी जा रही है।"2 युवा पीढ़ी प्रेम करने और कविता लिखने को एक समान मानते थे। उनका मानना था कि ये दोनों मनुष्य की स्वतंत्र अभिव्यक्ति का प्रमाण है। नयी पीढ़ी के ऐसी रचनाओं में कभी-कभी तो द्वन्द्व, तनाव औरगहरी पीडा का भी दर्शन होता है। मगर आज के युवा कवि जाति और धर्म के निर्मम रूढ़ियों के वेदी पर सार्वजनिक रूप में कभी-कभी अंजान रहते हैं।

नयी पीढ़ी के कथा साहित्य में आख्यान के लचीलेपन और उन्मुख्त स्वभाव के कारण इतिहास में स्थिति की स्मृति और वर्तमान के अनुभव को एक साथ शक्त करने की क्षमता अधिक रखनेवाली है। आख्या में कविता से ज़्यादा अतीत, वर्तमान और भविष्य के बीच की आवाज़ा ही की स्वतंत्रता होती है। नयी पीढ़ी के रचनाकार भूमंडलीकरण, उदारीकरण और टेकनोलॉजी के प्रभाव के कारण भारतीय समाज सभ्यता की अनेक अवस्थाओं में विभाजित होने और ऐसे आवश्यकताओं में जीनेवालों के बीच अलगाव बढने की सत्य को समझ रहे हैं। इस संदर्भ में डॉ. पाण्डेयजी कहते हैं कि "नयी पीढ़ी के रचनाकारों में अपने समय और समाज के प्रति गहरी सहजता, तीव्र संवेदनशीलता और समाजिक सरोकारों की व्यापकता है, लेकिन कविता उपन्यास और कहानी में नयी पीढ़ी की स्वप्नशीलता से गुज़रने के बाद यह देखकर बहुत आश्चर्य होता है कि किसी भी विधा में भूख जैसी ज्वलन्त और महत्वपूर्ण समस्या पर कोई महत्वपूर्ण रचना

नहीं दिखाई देती।"3 नयी पीढ़ी के रचनाकार समाज के प्रति सजग होकर समाज में व्याप्त ज्वलंत समस्या गरीबी के विभिन्न पक्षों को लेकर रचनाकार्य कर रहे हैं।

युवा पीढ़ी के रचनाओं में नये सोच के साहस को भी विवेचनात्मक तरीके से पेश किया गया है। युवा पीढ़ी की विवेचनात्मकता और आलोचनात्मक दृष्टि के संदर्भ में डॉ. मैनेजर पाण्डेय जी का कथन हैं - "विवेचनात्मक गद्य का दूसरा रूप नयी पीढ़ी की आलोचना में दिखाई देता है। इस पीढ़ी के आलोचकों ने हिन्दी आलोचना में दिखाई देता है। इस पीढ़ी के आलोचकों ने हिन्दी आलोचना में अपनी राह बनाने के लिए पहले से मौजूद कई तरह के भ्रमों और बाधाओं से संघर्ष किया है। जिम्मेदार आलोचना के विकास केलिए हिन्दी आलोचना को एक ओर जनसंपर्क का साधन बनने से बचाना ज़रूरी है तो दूसरी ओर उसे अपने जजमानों की जय-जयकार करनेवाली प्रवृत्ति से भी मुक्त करना अनिवार्य है। नयी पीढ़ी के आलोचकों ने इन दोनों प्रवृत्तियों से मुक्त होकर अपना आलोचना दृष्टि का निर्माण किया है। साथ ही उन्होंने आलोचना में साहित्यवाद के पूर्वाग्रहों से संघर्ष करते हुए एक ऐसी आलोचना दृष्टि विकसित की है, जो साहित्य की ज़मीन पर रहकर अपने समय और समाज के वैचारिक संकटों, द्वन्द्वों और संघर्षों से मुठभेड़ करती है।"4 नयी पीढ़ी के आलोचक हिन्दी आलोचना में पहले से मौजूद कई भ्रम और बाधाओं से संघर्ष किया है। जिम्मेदार आलोचना के विकास के लिए हिन्दी आलोचना को एक जनसंपर्क का साधन बनने से बचाने के लिए जजमानों की जयकार करनेवाली प्रकृति से मुक्त कराना है। नई पीढ़ी के आलोचक इन दोनों प्रवृत्तियों से मुक्त एक अलग आलोचना दृष्टि का निर्माण किया है। ये लोग आलोचना में साहित्यवाद पूर्वग्रहों से संघर्ष करते हुए साहित्य की ज़मीन पर रहकर अपने समय और समाज के वैचारिक संकटों, द्वन्द्वों और संघर्षों से मुठभेड़ करते हुए आगे बढ़ते हैं।

हिन्दी साहित्य 1990 के बाद दलित साहित्य का उभार हुआ। दलित साहित्य में आत्मकथा, उपन्यास, कहानी, कविता आदि लगभग सभी विधाओं में लेखन हो रहा है। दलित साहित्य का आन्दोलन अखिल भारतीय आन्दोलन है। दलित साहित्य हिन्दी के ललित साहित्य से भिन्न होता है। इसमें जीवन का यथार्थ। उस यथार्थ के त्रासद अनुभवों से अंतरंग रूप से जुड़ी सहज भाषा है। दलित साहित्य में अनुभवों को मनोरम बनाने की और भाषा को सरल बनाने की चेष्टा रहती है। भारतीय समाज में दलित कई हज़ार वर्षों से अजनबीपन और पराया पन का जो अनुभव कर रहा उनका यथार्थ चित्रण हिन्दी साहित्य में आधुनिकता के प्रमाण के रूप में हो रहा है। दलित कवि स्वर्ण समाज के इतिहास और साहित्य के बारे में तरह-तरह के सवाल पूछे जा रहे है। दलित कहानिकार के संबन्ध में डॉ. पाण्डेय जी कहते हैं - ""दलित कहानिकारों ने हिन्दू समाज की संरचना में मौजूद दमन हिंसा और पाखंड की प्रवृत्तियों को उजागर किया है और उनका विरोध भी किया है। इस दृष्टि से वाल्मीकी का सलाम कहानी संग्रह अत्यन्त महत्वपूर्ण है।""5 हिन्दू समाज में संरचना मौजूद दमन, हिंसा और पाखंड की प्रवृत्तियों उजागर करते हुए विरोध किया है। जिसका सुन्दर चित्रण वाल्मीकी के "सलाम" कहानी में हुआ है।

आज की युवा पीढ़ी नाट्य लेखन में भी सक्रिया है। आजकल के हिन्दी नाटकों समकालीन भारतीय समाज की उलझन और वैचारिक संकटों की जटिलता का सुन्दर चित्रण है। जन आन्दोलन से जुडे बहुत सारे नुक्कड़ नाटक भी लिखे गए है। युवा पीढ़ी के नाटककारों में प्रमुख नाटक में आज के भारतीय बुद्धिजीवी वर्ग बुद्धिजीवी समुदाय के दोहरे चरित्र अवसरवाद पाखंड, स्वार्थपरता, तिकड़म, अमानवीयता और विचारों के साथ व्याभिचार की प्रवृत्ति के साथ व्यभिचार की प्रवृत्ति पर भी गहरा व्यंग्य प्रस्तुत किया गया है।

युवा पीढ़ी के रचनाकारों के सामने साहित्य की सामाजिकता की रक्षा की चुनौती सामने है। इस संदर्भ में डॉ. मैनेजर पाण्डेय जी का मत है - "युवा पीढ़ी अभी पूरी तरह दुनियादार नही हुई है। उसमें अपने सामाजिक परिवेश के प्रति तीव्र उत्सुकता और सतर्क संवेदनशीलता है। उसके सोच की ताकत अभी व्यवस्ता के प्रपंचों से आक्रांत नहीं है, इसलिए वह अपनी रचनाशीलता के सामने खडी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम है।"6 आज के समाज में संचार

माध्यम और टेलिविज़न के प्रसरण से अनेक चुनौती आती है। फिर भी नयी पीढ़ी के रचनाकारों में संवेदनशीलता होने के कारण वे समाज के इन चुनौतियों का डढ़कर समना करने में सक्षम हो जाते हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि मैनेजर पाण्डेय जी की युवा पीढी की रचनाशीलता संबंधी विचारदारा नयी पीढ़ी के उभर रहे रचनाकारों के लिए पूर्ण रूप से प्रेरणादायक ही सिद्ध होगा। नागार्जुन के कृतियों में निहित युवा पीढ़ी की रचनाशीलता संबंधी विचारधारा में भी पाण्डेय जी ने अपना दृष्टिकोण व्यक्त किया है। इस के साथ-साथ भूमंडलीकरण की फैलाव के कारण हो रही परिवर्तन का भी सुंदर विश्लेषण भी पाण्डेय जी ने प्रस्तुत किया है। सारी दुनिया में भूमंडलीकरण के फलस्वरूप ही अमेरिकीकरण भारत में हुआ था और इसके बाद हिंसा की संस्कृति का विकास भी होने लगा था। इसे रोकते हुए प्रेम रूपी ज्योति का प्रकाश, फैलाने में नयी पीढ़ी के रचनाकार सफल सिद्ध हुए है। पेम करने और कविता लिखने को समतुल्य माननेवाले युवा पीढ़ी के रचनाकार की विशेषताओं का चित्रण भी पाण्डेय जी ने अपने आलोचनात्मक लेख में विस्तृत रूप से किया है। दलित साहित्य और नाट्य लेखन में विशिष्ट शैली की रचना में रक्षम नयी पीढ़ी के रचनाकार सामाजिक परिवर्तन के चुनौती को हृदय से स्वीकार करते हुए आज भी आगे बढ रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

आलोचना की सामाजिकता, मैनेजर पाण्डेय

1. मैनेजर पाण्डेय - आलोचना की सामाजिकता, पृ. 165
2. मैनेजर पाण्डेय - आलोचना की सामाजिकता, पृ. 172
3. मैनेजर पाण्डेय - आलोचना की सामाजिकता, पृ. 178
4. मैनेजर पाण्डेय - आलोचना की सामाजिकता, पृ. 180
5. मैनेजर पाण्डेय - आलोचना की सामाजिकता, पृ. 182
6. मैनेजर पाण्डेय - आलोचना की सामाजिकता, पृ. 184